

श्री रज़ा सा.

17-1-81

आपको मेरा एक पत्र मिला गया होगा।
फिर से लिख रहा हूँ और आपको कष्ट दे
रहा हूँ, आग्रह कर रहा हूँ कि कृपया मेरे
विषय में, मेरे कार्यक्रम के विषय में एक
अच्छा लेख 'नई दुनियाँ' में अवश्य भेजें।
मैं केवल आपको याद दिला रहा हूँ।
आपने हमसे ~~लिखने~~ कहा था कि
आप 'नई दुनियाँ' के लिये लिखेंगे।
श्री लालू बारापुत से बात हुई थी वे बहुत
सुश्रुत हैं कि आप 'नई दुनियाँ' के लिये लिखेंगे।
अब तक तो आपको पूर्वोक्त कविताओं का और
मुक्तिबाध अंक मिला गया होगा।
मैं कितना खुशनुमा हूँ कि पेरिस में
आपका लेख मिला सका।
श्रीमती आशीन को मेरा सादर नमस्कार कहें।
पत्र भेज नहीं लिख पा रहा हूँ माफ़ करें।

-आपका दोस्त
क. र. १

Please note both the
 dates: 10/11/82 & 10/11/82

RMAH

101

Paris -

Paris, February 5, 1982.

गिय वंशी अरेशवरी

आपके दो पत्र और तब के आंक भी मिले । आप को बहुत देर से लिख रहा हूँ । व्यस्तता कुछ ऐसी ही रही है कि नब्बे पत्र लिखने का मुश्किल लगता है । (सभी जगहों में मुझे कोई दिनचर्या नहीं लगती) इससे आपका सब लिखना चाहता हूँ, चित्रों को छोड़ना पड़ता है । अब चित्रों में लगा रहता हूँ, लिखना कमिज लगता है । बहरे हान, आप ये दो शब्द ही ।

"तनाव" का ईव बोनफा की कविताओं पर केन्द्रित आंक गोएकिये में ही लिखा । अतुल्य इतना मुन्द (या कि उसी समय यह पत्र शुरू किया था । उस कि भी बहुत कुछ लिखना चाहता था और आज भी । फिर रुक । दगरी भाषा किन्ही समझ है । लगता है ईव बोनफा ने ही हकी ने ही लिखा । "इन्डोइकशन" भी बहुत बिया (शौन है । आपसे भी गिरधाररा से लिखा है ।

आ पता गेट करें । ~~आ~~ पौम से ~~आ~~ आदवा से गई तक रहते हैं, और यह से सितरवा तक हर सोन "गोएकियो" / "आत मेक के उदघाटन के समय इस आह गोपान आने की बड़ी इच्छा थी पर कई प्रदर्शनी हैं इस हाल और आज ने ले सकेंगे । मुझे कशालेगो कि आप "अन्तराष्ट्रीय कविता" और "अर्थविवि कविताओं" के आंक मिलाने । विदेश में बहुत कुछ समझ मिलता इन्हे पक्का, और यह आह का कि बहुत कुछ ले रहा है देश में गहन प्रवेश में ।

अरमाना (कौन) हैं, गिरार राह कर रहे हैं । (यदि कि पिपीया आवा फेरेगा ।

जस आज इतना ही । की बहुत है - बहुत ।

शुक्राचार्य - आका - (रा)

RMAH
 Rue du Chateau
 GORDON
 06500 MENTON